BA-I
History (Hons)

Old stone age and new stone age

प्रश्न - पूर्व- पाषाण युग एवं नव पाषाण युग।

उत्तर - सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डारविन द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त कि इस पृथ्वी पर मानव का प्रादुर्भाव आज से लाखों वर्ष पहले हुआ और काल क्रम में यह क्रमशः विकासोन्मुख होता चला गया। इसे मानव सभ्यता की उत्पत्ति का विकासवादी सिद्धान्त कहा जाता है। मानव सभ्यता के विकास के सम्बन्ध में सुदूर अतीत में एक लम्बे समय तक यह मान्यता बनी रही कि इस सृष्टि की रचना एवं विभिन्न प्राणियों का सृजन ईश्वर की कृपा से हुई थी। यह सिद्धान्त मानव की उत्पति एवं सभ्यता के विकास का दैविक सिद्धान्त कहलाता है। आज के मानव सभ्यता की सफलता रूपी विशाल स्तंभ की नींव लाखों वर्ष पूर्व में ही रखी गयी थी। मानव की स्वभाविक प्रवृति जैसे - खोज करना, विकास करना, सीखना आदि ने इसे आज के वर्तमान मानव तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अब यह प्रश्न उठता है कि आखिर मनुष्य को अपने वर्तमान रूप को प्राप्त करने में किन-किन स्थिति का सामना करना पड़ा होगा? हमें इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए मानव सभ्यता के विकास के क्रम को समझना होगा।

प्रागैतिहासिक काल

इस युग में मनुष्य ने जिस सभ्यता का निर्माण किया, उसे हम आदि

कालीन सभ्यता या आदिम सभ्यता [illegible]।
यद्यपि इस काल के लिए कोई लिखित प्रमाण का अभाव है [illegible] आधार पर, काल्पनिक [illegible] रूप से कुछ कहा जाता है। [illegible] ऐतिहासिक और विद्वानों [illegible] और अनुमान के आधार पर [illegible] काल के मानव जीवन की [illegible] प्रयास करने का प्रयत्न किया है। [illegible] मूल्यवान औजार [illegible] कहा जा सकता है। [illegible] कई विद्वानों द्वारा [illegible] के आधार पर मानव [illegible] सभ्यता के बारे में जानते हैं।

मानव एक विवेकशील प्राणी के रूप में —
हम जानते हैं कि पृथ्वी पर [illegible] के प्राणी होते हैं (1) विवेकशील और (2) विवेक हीन। [illegible] विवेकशील प्राणी माना जाता है। [illegible] मानव सभ्यता के प्रारम्भ [illegible] में विवेक नाम की कोई चीज नहीं थी और उसका जीवन पशुवत था। [illegible] के जीवन के [illegible] कोई अन्तर नहीं था। मानव ने अपने [illegible] विवेक की शक्ति से परिस्थितियों [illegible] किया। अपनी बुद्धि की शक्ति के कारण विकास करता गया। इसी प्रकार मानव सभ्यता के सीढ़ियों पर निरन्तर चढ़ता गया। मानव सभ्यता के इस प्रारंभिक चरण को विद्वानों ने पूर्व पाषाण युग का नाम दिया है।

मानव जीवन और प्राकृतिक वैभव में —

मानव सभ्यता के विभिन्न चरणों में मानव के जीवन और प्राकृतिक के बीच निकट रिश्ता रहा है। मानव जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएं होती हैं। (1) भोजन (2) वस्त्र और (3) आवास। इस प्रकार से भोजन मानव जीवन की प्राथमिक नहीं तब जीवन की आवश्यकता होती किसी औद्योगिक की कोई चीज से ये सब अनिवार्य थे। अतः अपने जीवन-यापन के लिए वह पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर रहता था। वे कन्द-मूल फल भोजन के रूप में ग्रहण किया करते थे। जंगली कन्द-मूल एवं जानवरों का मांस भोजन के रूप में ग्रहण करते थे। अपने आप को ठंड, गर्मी और बरसात से बचाने के लिए वे वृक्ष के तने में, वृक्ष के पत्ते एवं छाल और आवास के लिए पहाड़ की कंदराओं एवं गुफाओं आदि का प्रयोग करते थे। नदी-नाले एवं झरनों के जल से ही प्यास बुझाते थे। जानवरों का शिकार करने और अपने को हिंसक जानवरों से सुरक्षित करने के लिए वे प्रारंभ में पत्थरों के औजार बनाये जो नुकीले एवं कमजोर होते थे। बाद में उन्होंने धातुओं के औजार का आविष्कार किया। इस तरह मानव सभ्यता का यह इतिहास क्रमशः पाषाण युग और धातु युग के नाम से जाना जाता है।

इसी अध्याय का शेष भाग अगले क्रम में —

Scanned with CamScanner